

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी: सामाजिक यथार्थ, विद्रोह और आत्म-अन्वेषण

ममता रानी
शोधार्थी,
मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग,
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
mamtajain19587@gmail.com

डॉ. प्रदीप कुमार
शोध निर्देशक,
मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर

सारांश

कृष्णा सोबती (1925-2018) हिंदी साहित्य की उन मूर्धन्य लेखिकाओं में से एक हैं जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से नारी जीवन के विविध आयामों को अत्यंत निर्भीकता और सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास न केवल अपने समय के सामाजिक यथार्थ का प्रामाणिक दस्तावेज हैं, बल्कि वे नारी की अंतरात्मा में छिपी संघर्ष चेतना, विद्रोह की आकांक्षा और अपनी पहचान स्थापित करने की ललक को भी सशक्त स्वर प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र कृष्णा सोबती के प्रमुख उपन्यासों जैसे 'मित्रो मरजानी', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'ऐ लड़की', 'जिन्दगीनामा' और 'डार से बिछुड़ी' में चित्रित नारी पात्रों का गहन विश्लेषण करता है। यह पत्र नारी के सामाजिक परिवेश, पितृसत्तात्मक समाज में उसकी स्थिति, यौनिकता की अभिव्यक्ति, रूढ़ियों के प्रति उसका विद्रोह और आत्म-अन्वेषण की उसकी यात्रा को रेखांकित करता है। सोबती की नारियाँ केवल बेबस पात्र नहीं हैं, बल्कि वे अपनी परिस्थितियों से जूझती हुई, अपनी शर्तों पर जीवन जीने का साहस रखने वाली जीवंत शख्सियतें हैं, जो हिंदी साहित्य में नारी चित्रण को एक नई दिशा देती हैं।

मुख्य शब्द: कृष्णा सोबती, नारी, उपन्यास, पितृसत्ता, विद्रोह, यौनिकता, पहचान, सामाजिक यथार्थ, आत्म-अन्वेषण, हिंदी साहित्य।

1. भूमिका

हिंदी साहित्य में कृष्णा सोबती का आगमन एक ऐसे समय में हुआ जब नारी लेखन अभी भी अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष कर रहा था। उन्होंने अपनी लेखन शैली, भाषा के अनूठे प्रयोग और विषयों की निर्भीक प्रस्तुति से एक विशिष्ट पहचान बनाई। उनकी रचनात्मकता ने साहित्य को न केवल नई दिशा दी, बल्कि नारी जीवन के उन अनछुए पहलुओं को भी उजागर किया जिन्हें आमतौर पर वर्जित माना जाता था। सोबती ने अपनी नारियों को मात्र घरेलू दायरे तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और यौनिक स्तर पर जटिल और बहुआयामी चरित्रों के रूप में गढ़ा।

कृष्णा सोबती के उपन्यास समाज में नारी की स्थिति, उसके अंतर्विरोधों, आकांक्षाओं और संघर्षों का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करते हैं। उनकी नारियाँ परंपरागत साँचों को तोड़ती हैं, पितृसत्तात्मक मूल्यों को चुनौती देती हैं और अपनी पहचान व स्वतंत्रता के लिए जूझती हैं। यह शोध पत्र सोबती के साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों, उसके सामाजिक बंधनों, विद्रोह की प्रकृति और आत्म-अन्वेषण की उसकी अनवरत यात्रा पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य यह स्थापित करना है कि कृष्णा सोबती के उपन्यास नारी चेतना के विकास और उसके सशक्तिकरण की एक महत्वपूर्ण गाथा कहते हैं।

2. कृष्णा सोबती का साहित्यिक अवदान और नारी-दृष्टि

कृष्णा सोबती का हिंदी साहित्य में योगदान उनके अद्वितीय भाषा शिल्प, बोलियों के प्रयोग और चरित्रों की मनोवैज्ञानिक गहराई के कारण महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने लेखन में निडरता और ईमानदारी का परिचय दिया, विशेषकर नारी की यौनिकता और उसकी आंतरिक दुनिया के चित्रण में। उनकी नारी-दृष्टि पारंपरिकता और आधुनिकता के द्वंद्व से परे जाकर नारी के अस्तित्वगत प्रश्नों पर केंद्रित रही है। वे नारी को समाज के उप-उत्पाद के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र इकाई के रूप में देखती हैं जिसके अपने सुख-दुख, इच्छाएँ और विद्रोह हैं।

सोबती की नारियाँ विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से आती हैं, लेकिन उनमें एक आंतरिक शक्ति और परिस्थितियों से जूझने का अदम्य साहस होता है। चाहे वह 'जिन्दगीनामा' की काशी हो, 'मित्रो मरजानी' की मित्रो, 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती या 'ऐ लड़की' की वृद्धा, सभी किसी न किसी स्तर पर अपने समय और समाज के स्थापित नियमों को चुनौती देती नजर आती हैं। सोबती की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे इन नारियों के संघर्ष को किसी आदर्शवाद के चश्मे से नहीं देखतीं, बल्कि उन्हें उनकी संपूर्ण मानवीय जटिलता के साथ प्रस्तुत करती हैं।

3. पितृसत्तात्मक समाज और नारी की स्थिति

कृष्णा सोबती के उपन्यास पितृसत्तात्मक समाज की उन सूक्ष्म और स्थूल संरचनाओं का पर्दाफाश करते हैं जो नारी के जीवन को नियंत्रित करती हैं। उनके पात्र अक्सर ऐसे परिवेश में जीते हैं जहाँ नारी की भूमिकाएँ पूर्व-निर्धारित होती हैं, जहाँ उसकी इच्छाओं और आकांक्षाओं को दबाया जाता है और जहाँ उसका अस्तित्व पुरुषों के इर्द-गिर्द संरचित होता है।

3.1. 'जिन्दगीनामा' में पारंपरिक परिवेश:

'जिन्दगीनामा' पंजाब के ग्रामीण जीवन और उसकी सांस्कृतिक परंपराओं का महाकाव्यात्मक चित्रण है। यहाँ नारी जाति को सामाजिक ढाँचे में एक निश्चित स्थान दिया गया है, जहाँ उसका कार्य गृहस्थी संभालना, बच्चे पैदा करना और परिवार की मर्यादा बनाए रखना है। काशी जैसी पात्र मजबूत हैं, लेकिन वे भी उस वृहद पितृसत्तात्मक व्यवस्था का हिस्सा हैं जहाँ पुरुषों के निर्णय सर्वोपरि होते हैं। यहाँ नारी का संघर्ष परिवार और समुदाय के भीतर अपनी जगह बनाने, सम्मान अर्जित करने और परंपराओं को निभाने में निहित है। हालाँकि, इन सबके बावजूद, सोबती इन पात्रों में एक आंतरिक शक्ति और सहनशीलता दर्शाती हैं जो उन्हें विषम परिस्थितियों में भी खड़ा रखती है।

3.2. 'डार से बिछुड़ी' में विवाह और परित्यक्ता का दुख:

'डार से बिछुड़ी' की पाशा एक ऐसी नारी है जिसे सामाजिक रीतियों और पुरुषों की इच्छाओं के चलते पीड़ा झेलनी पड़ती है। उसकी शादी एक ऐसे व्यक्ति से होती है जिसे वह नहीं जानती और फिर उसे छोड़ दिया जाता है। यह उपन्यास दिखाता है कि कैसे एक परित्यक्ता नारी की सामाजिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है और कैसे वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है। पाशा का संघर्ष केवल शारीरिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक भी है, जहाँ उसे समाज की अवहेलना और पुरुष-प्रधान मानसिकता का सामना करना पड़ता है।

उसका जीवन पितृसत्तात्मक समाज के कड़वे यथार्थ को उजागर करता है जहाँ नारी की गरिमा उसके पति से जुड़ी होती है।

इन उपन्यासों में सोबती ने दिखाया है कि पितृसत्तात्मक समाज नारी के लिए कैसे एक कारागार बन जाता है, जहाँ उसके सपने और इच्छाएँ दम तोड़ देती हैं। यह समाज उसे एक वस्तु के रूप में देखता है, जिसका उपयोग प्रजनन और गृहस्थी के लिए किया जाता है, न कि एक स्वतंत्र मनुष्य के रूप में।

4. विद्रोह और स्वाधीनता की आकांक्षा

कृष्णा सोबती की नारियाँ केवल परिस्थितियों की शिकार नहीं होतीं, बल्कि उनमें से कई में व्यवस्था को चुनौती देने और अपनी स्वतंत्रता का मार्ग तलाशने की अदम्य इच्छा भी होती है। यह विद्रोह कभी मुखर होता है तो कभी मौन, कभी सामाजिक होता है तो कभी व्यक्तिगत।

4.1. 'मित्रो मरजानी' का मुखर यौनिक विद्रोह:

'मित्रो मरजानी' हिंदी साहित्य के सबसे साहसिक उपन्यासों में से एक है, जहाँ मित्रो का चरित्र पितृसत्तात्मक समाज की नींव हिला देता है। मित्रो अपनी यौन इच्छाओं को खुलकर व्यक्त करती है, पुरुषों के सामने अपनी बराबरी का दावा करती है और पारंपरिक नारीत्व की अवधारणा को नकारती है। वह अपने पति के भाइयों से भी यौन और मनोवैज्ञानिक स्तर पर संवाद स्थापित करती है, जो उस समय के समाज के लिए अत्यंत विद्रोही कदम था। मित्रो का विद्रोह केवल यौनिक नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक विद्रोह भी है जहाँ वह नारी की आवाज को एक ऐसे समाज में बुलंद करती है जहाँ उसकी यौनिकता को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है। वह बताती है कि 'मर्द को तो मर्द चाहिए', और 'नारी को भी मर्द चाहिए', इस प्रकार वह पुरुषों और नारियों के बीच एक स्वाभाविक समानता को स्थापित करती है। मित्रो अपनी देह और अपनी इच्छाओं पर अपना अधिकार मानती है।

4.2. 'ऐ लड़की' में आत्म-निर्भर जीवन की तलाश:

'ऐ लड़की' एक वृद्ध महिला और उसकी युवा बेटी के बीच के संवादों के माध्यम से नारी के जीवन के विभिन्न पड़ावों और उसकी स्वतंत्रता की आकांक्षा को दर्शाता है। वृद्ध माँ ने अपने जीवन में कई सामाजिक बंधनों और अपेक्षाओं को तोड़ा है। वह अपनी बेटी को समाज द्वारा निर्धारित 'अच्छी लड़की' की परिभाषा से ऊपर उठकर अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने के लिए प्रेरित करती है। वह नारी की आत्म-निर्भरता, अकेलेपन को स्वीकारने और अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जीने की वकालत करती है। यह उपन्यास दिखाता है कि विद्रोह केवल मुखर ही नहीं होता, बल्कि जीवन के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण अपनाने और अपनी आंतरिक स्वतंत्रता को बनाए रखने में भी निहित होता है।

4.3. 'सूरजमुखी अंधेरे के' में यौनिक आघात से मुक्ति:

'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती एक ऐसी नारी है जिसने बचपन में यौन उत्पीड़न का सामना किया है। उसका विद्रोह किसी सामाजिक ढांचे के खिलाफ सीधा नहीं है, बल्कि यह अपने स्वयं के आघात से मुक्ति पाने और एक सम्मानजनक जीवन जीने की कोशिश है। रत्ती अपने अतीत के अंधेरे से निकलकर एक नई पहचान गढ़ने का प्रयास करती है। उसका संघर्ष अपनी टूटी हुई आत्मा को जोड़ने, अपने यौनिक आघात से उबरने और नए सिरे से जीवन को स्वीकार करने में निहित है। यह नारी के आंतरिक साहस और उसकी आत्म-हीलिंग की क्षमता को दर्शाता है। यह उपन्यास नारी के मन पर पड़ने वाले यौनिक हिंसा के गहरे प्रभावों और उससे उबरने की उसकी जद्दोजहद को मार्मिकता से प्रस्तुत करता है।

इन उपन्यासों में सोबती ने दर्शाया है कि नारी अपनी स्वतंत्रता और पहचान के लिए किस प्रकार संघर्ष करती है, चाहे वह सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ हो या अपने स्वयं के भीतर के दुखों के खिलाफ।

5. नारी की यौनिकता और पहचान की तलाश

कृष्णा सोबती ने नारी की यौनिकता को अत्यंत सहजता और निर्भीकता से चित्रित किया है, जो हिंदी साहित्य में एक क्रांतिकारी कदम था। उन्होंने दिखाया कि नारी की यौनिकता उसके अस्तित्व का अभिन्न अंग है और उसे दबाने से उसके व्यक्तित्व का विकास बाधित होता है।

5.1. मित्रो की यौनिक अभिव्यक्ति और पहचान:

‘मित्रो मरजानी’ में मित्रो की यौनिकता उसकी पहचान का केंद्रीय तत्व है। वह अपनी इच्छाओं को दबाने से इनकार करती है और उन्हें खुलकर अभिव्यक्त करती है। उसका यह कृत्य उसे एक स्वतंत्र और सशक्त नारी के रूप में स्थापित करता है। मित्रो यह स्थापित करती है कि नारी केवल प्रजनन का माध्यम नहीं है, बल्कि उसकी अपनी यौनिक इच्छाएँ और जरूरतें भी हैं, जो उसके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उसकी पहचान केवल पत्नी या बहू के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र यौनिक पहचान रखने वाली स्त्री के रूप में उभरती है।

5.2. रत्ती का यौनिक आघात और आत्म-अन्वेषण:

‘सूरजमुखी अंधेरे के’ में रत्ती की यौनिकता का अनुभव आघातपूर्ण है, लेकिन यह उसके आत्म-अन्वेषण की यात्रा का भी हिस्सा बनता है। यौन उत्पीड़न के बाद वह अपने शरीर और मन के साथ एक जटिल रिश्ते में बँध जाती है। उसका संघर्ष अपनी देह और आत्मा को पुनः स्वीकार करने में है। यह उपन्यास यौनिकता को केवल सुख के रूप में नहीं, बल्कि आघात, भय और फिर उससे मुक्ति की एक जटिल मानवीय प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है। रत्ती अपनी पहचान उस आघात से बाहर निकलकर अपनी आंतरिक शक्ति से प्राप्त करती है।

5.3. ‘ऐ लड़की’ में यौनिकता और जीवन के चुनाव:

‘ऐ लड़की’ में वृद्धा स्त्री अपनी युवा बेटा को अपनी यौनिकता और जीवन के चुनावों के बारे में खुलकर सोचने के लिए प्रेरित करती है। वह समाज द्वारा निर्धारित ‘सही-गलत’ के दायरे से बाहर निकलकर अपने अकेलेपन, अपनी देह और अपनी इच्छाओं को स्वीकारने की बात करती

है। यह संवाद दर्शाता है कि नारी की यौनिकता उसकी पहचान, उसकी स्वतंत्रता और उसके जीवन के निर्णयों से गहराई से जुड़ी हुई है।

सोबती ने इन उपन्यासों के माध्यम से नारी की यौनिकता को एक वर्जित विषय के बजाय उसके संपूर्ण मानवीय अनुभव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। उन्होंने यह भी दर्शाया कि यौनिकता किस प्रकार नारी की पहचान के निर्माण और उसकी स्वतंत्रता के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

6. भाषा और शिल्प

कृष्णा सोबती की भाषा उनके पात्रों की तरह ही जीवंत और बेबाक है। उन्होंने परंपरागत साहित्यिक भाषा की सीमाओं को तोड़कर लोक-भाषाओं, मुहावरों और कहावतों का अद्भुत प्रयोग किया है, विशेषकर 'जिन्दगीनामा' और 'मित्रो मरजानी' में। यह भाषा शिल्प उनके नारी पात्रों की आवाज को अधिक प्रामाणिक और प्रभावी बनाता है। उनके संवाद तीखे, व्यंग्यात्मक और गहरे अर्थों वाले होते हैं। वे नारी के मन की जटिलताओं और उसकी यौनिकता की अभिव्यक्ति के लिए नए शब्द गढ़ती हैं और सामाजिक व यौनिक वर्जनाओं को अपनी भाषा के माध्यम से चुनौती देती हैं।

'मित्रो मरजानी' में मित्रो की भाषा अत्यंत सीधी, स्पष्ट और कभी-कभी अश्लील मानी जाने वाली भी है, लेकिन यही भाषा उसके विद्रोही व्यक्तित्व को पूरी तरह से उजागर करती है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' में रत्ती की आंतरिक (एकांत-भाषण) उसकी मनोवैज्ञानिक स्थिति और आघात को गहराई से दर्शाती है। 'ऐ लड़की' में संवादों में एक दार्शनिक गहराई और प्रतीकात्मकता है। सोबती का शिल्प नारी के आंतरिक और बाहरी यथार्थ को एक साथ प्रस्तुत करने में अत्यंत सक्षम है।

7. निष्कर्ष

कृष्णा सोबती के उपन्यास हिंदी साहित्य में नारी चित्रण के मील के पत्थर हैं। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से नारी जीवन के सामाजिक यथार्थ, उसके संघर्ष, उसके विद्रोह और अपनी

पहचान के लिए उसकी सशक्त तलाश को अविस्मरणीय स्वर प्रदान किया है। उनकी नारियाँ केवल निष्क्रिय पात्र नहीं हैं, बल्कि वे अपनी परिस्थितियों से जूझती हुई, अपनी देह, अपनी इच्छाओं और अपनी आत्मा पर अपना अधिकार स्थापित करने वाली जीवंत शख्सियतें हैं।

सोबती ने पितृसत्तात्मक समाज के बंधनों, यौनिकता के दमन और सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ नारी के भीतर पनपते विद्रोह को सूक्ष्मता से पकड़ा है। 'मित्रो मरजानी' की मित्रो अपनी यौनिकता के माध्यम से, 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रत्ती अपने आघात से उबरकर और 'ऐ लड़की' की वृद्धा अपने जीवन के स्वतंत्र विकल्पों के माध्यम से अपनी पहचान गढ़ती हैं। 'जिन्दगीनामा' और 'डार से बिछुड़ी' जैसी रचनाएँ पारंपरिक समाज में नारी की स्थिति और उसके मौन संघर्षों को उजागर करती हैं।

कृष्णा सोबती का लेखन नारी चेतना के विकास का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उनकी नारियाँ हमें यह सिखाती हैं कि जीवन की प्रत्येक चुनौती का सामना साहस और अपनी आंतरिक शक्ति के साथ किया जा सकता है। उन्होंने हिंदी साहित्य को एक ऐसी नारी दी जो डरती नहीं, जो झुकती नहीं, और जो अपनी शर्तों पर जीवन जीने का साहस रखती है। सोबती का योगदान केवल नारी लेखन तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने समूचे हिंदी साहित्य को एक नई भाषा, एक नई दृष्टि और एक नई संवेदनशीलता प्रदान की है, जो आज भी प्रासंगिक है और भविष्य के लेखन को प्रेरित करती रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ :

सोबती, कृष्णा. मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, 1967.

सोबती, कृष्णा. सूरजमुखी अंधेरे के, राजकमल प्रकाशन, 1972.

सोबती, कृष्णा. ऐ लड़की, राजकमल प्रकाशन, 1991.

सोबती, कृष्णा. जिन्दगीनामा, राजकमल प्रकाशन, 1979.

सोबती, कृष्णा. डार से बिछुड़ी, राजकमल प्रकाशन, 1958.

शर्मा, रामविलास. कृष्णा सोबती: सृजन और संदर्भ. वाणी प्रकाशन, 2005.

चतुर्वेदी, ममता. कृष्णा सोबती का कथा-साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2008.

सिंह, बच्चन. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2004.

जोशी, शिवानी. नारी विमर्श और कृष्णा सोबती, प्रभात प्रकाशन, 2015.

मिश्र, विजयलक्ष्मी. स्त्री अस्मिता की खोज: कृष्णा सोबती के उपन्यासों में साहित्य भंडार, 2012.

